Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

समाजीकरण को परिभाषित करें तथा समाजीकरण की प्रक्रियाओं की विवेचना करें।

Define socialisation and describe its processes.

"समाज के नियमों को सीखने तथा उसके अनुसार व्यवहार करने की प्रक्रिया को socialization कहते हैं।" जन्म के तुरंत बाद मानव शिशु ना समाजिक होता है और ना ही आसमाजिक। उस समय वह केवल कुछ जैविक गुणों वाला एक जीवित प्राणी होता है। धीरे धीरे वह समाज की विशेष संस्कृति में पालते हुए सामाजिक प्राणी बन जाता है। वह अपनी ज़रूरतों को पूरा करने में समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ अन्तः क्रिया (interaction) करता है, जिससे नए नए अनुभवों का ज्ञान होता है। इन अनुभवों के फलस्वरुप बच्चा समाजिक परम्पराओं, नियमों एवं रूढ़ियों के अनुसार व्यवहार करना सीख जाता है।

आधुनिक काल में विशेषज्ञों के अनुसार "समाजीकरण की प्रक्रिया किसी उम्र में आ कर रूकती नहीं है बल्कि पुरे जीवन काल में चलती रहती है।"

Atkinson, Atkinson and Hilgard 1983 के अनुसार- **"समाजिक वातावरण द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण के आधार पर व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवहारों को सुगठित करने की प्रक्रिया को समाजीकरण कहा जाता है।" ("Socialisation is the process of shaping of individual's characteristics and behaviour through the training that the social environment provides.")**

इन परिभाषाओं के विश्लेषण करने से हमें समाजीकरण के बारे में निम्नांकित तथ्य मिलतेहैं-

1) समाजीकरण सीखने का एक उपसेट है (socialisation is a subset of learning)। इस उपसेट द्वारा सीखने की प्रक्रिया का होना आवश्यक है। अगर व्यक्ति में सीखने की प्रक्रिया नहीं होगी, तो समाजीकरण भी नहीं होगा। समाजीकरण में उन प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है जो समाजिक रूप से महत्वपूर्ण हैं।

2) समाजीकरण क्यूंकि समाज के मानकों (norms) तथा मूल्यों (values) पर आधारित होता है, अतः इस पर समय एवं स्थान का काफी प्रभाव पड़ता है।

3) समाजीकरण में सांस्कृतिक आत्म सातकरण (cultural assimilation) तथा सांस्कृतिक संचरण (culturan transmission) की प्रक्रिया सम्मिलित होती है।

4) समाजीकरण में व्यक्ति के अहम् या आत्म का विकास होता है। जब वह समाज के अन्य लोगों के साथ अन्तः क्रिया करता है तो इससे उसे दुसरो लोगों के अलावा स्वयं को भी समझने का मौका मिलता है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समाजीकरण समाजिक सीखने (social learning) कि एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक दुनिया से प्रभावित हो कर अपने अहम् या आत्म (self) को उनके मानकों (norms) एवं मूल्यों (values) के अनुसार विकसित करता है।

समाजीकरण की प्रक्रिया (Process of Socialisation)-

समाजीकरण की प्रक्रिया से तात्पर्य वैसी प्रणाली से होता है जिसके फलस्वरुप व्यक्ति सामाजीक व्यवहारों को सीखता है।

समाजीकरण की प्रमुख प्रक्रियाएं निम्नलिखित हैं-

1) **पालन-पोषण प्रणाली (Rearing Practices)** - व्यक्तियों का समाजीकरण पालान-पोषण प्रणाली द्वारा अधिक प्रभावित होता है। विभिन समाज एवं संस्कृति में बच्चों के पालन-पोषण की प्रणाली अलग अलग होती है।

2) **अनुकरण (Immitation)** - समाजीकरण अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा भी संपन्न होता है। Evans, 1978 के अनुसार- दुसरे के व्यवहारों की जान बुझ कर या अचेतन रूप से नक़ल करना, अनुकरण कहलाता है। अनुकरण की प्रक्रिया द्वारा बच्चे तथा व्यस्क दोनों ही समाज के महत्वपूर्ण व्यक्तिओं के व्यवहारों को सीखते है, जिससे उनमें समाजीकरण तीव्रता से होता है। ऐसे व्यक्तिओं के व्यवहारों का अनुकरण वे इस उम्मीद से करते हैं की ऐसा करने से उनकी सामाजीक मान्यता अधिक बढ़ जाती है।

3) **संसूचन या सुझाव (Suggestion)** - सुझाव समाजीकरण की अन्य प्रमुख प्रक्रिया है। माता पिता तथा शिक्षक प्रायः बच्चों को सामाजीक अभियोजन (social adjustment) करने में भिन्न भिन्न ढंग से मदद करते हैं। प्रायः ऐसा करने के लिए वे सुझाव का सहारा लेते हैं। जिससे उनका समाजीकरण तेज़ी से होता है। जैसे- अपने से बड़ों के साथ कैसे बोलना चाहिए, कैसे व्यवहार करना चाहिए, आदि।

4) **सहानुभूति (Sympathy)** - सहानुभूति की प्रक्रिया द्वारा भी व्यक्ति का समाजीकरण तेज़ी से होता है। James Drever, 1983 के अनुसार दूसरों के भावों एवं संवेगों के स्वाभाविक अभिव्यक्तिपूर्ण चिन्हों को देख कर उसी प्रकार के भावों एवं संवेगों को अपने में अनुभव करने की प्रवृत्ति को सहानुभूति कहते हैं। इस तरह से किसी को दुखी देख कर अपने आप में भी दुःख का अनुभव करना सहानुभूति का उदाहरण है। तथा जिन लोगों में सहानुभूति का गुण नहीं होता है उनके प्रति अन्य लोगों का विचार भी ठीक नहीं होता है।

5) **तादात्म्य (Identification)** - जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को model मान कर उनके व्यवहारों को अपनाने की कोशिश करता है तो इस प्रक्रिया को तादात्म्य कहते हैं। बच्चे तथा व्यस्क दोनों ही तादात्म्य द्वारा दूसरों के व्यवहार को सीखते हैं। तादात्म्य का चाहे जो रूप हो, व्यक्ति का समाजीकरण उसके द्वारा होता है। तादात्म्य स्थापित कर व्यक्ति नए सामाजिक व्यवहारों को सीखता है तथा समाजीकृत होता है।

6) **सहयोग (Cooperation)** - सहयोग द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया संपन्न होती है। सहयोग की भावना बच्चों तथा वयस्कों दोनों में पायी जाती है। जब व्यक्तियों में सहयोग की भावना तीव्र होती है तो ऐसे व्यक्ति दुसरे व्यक्तियों के साथ किसी भी तरह की सामाजीक परिस्थितियों में समायोजन आसानी से कर लेते हैं। Hollander, 1967 के अनुसार- "सहयोग की भावना तीव्र होने से बच्चों तथा वयस्कों दोनों में ही समाजीकरण अधिक तेज़ी से होता है"

7) **प्रतियोगिता (Competition)** - जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी लक्ष्य को समान रूप से महत्वपूर्ण समझ कर उसे प्राप्त करने का पूरा पूरा प्रयत्न करते हैं, तो इस स्थिति को प्रतियोगिता की संज्ञा दी जाती है। समाजीकरण

प्रतियोगिता की प्रक्रिया द्वारा भी काफी तेज़ी से होता है। दूसरी तरफ जिन व्यक्तियों में उस तरह की प्रतियोगिता की भावना की कमी होती है उनमें किसी सामाजीक व्यवहार को सीखने की उतनी अधिक तत्परता नहीं दिखती है तथा उनका समाजीकरण मंद गति से होता है।

8) **भाषा (Language)** - भाषा समाजीकरण की एक प्रमुख प्रक्रिया है। भाषा द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं, आदि को दूसरों तक पहुंचाता है तथा दूसरे की इच्छाओं एवं आवश्यकताओं को समझने की कोशिश करता है।

9) **प्रचार के माध्यम (Means of Propaganda)** - प्रचार के भिन्न भिन्न मध्यम जैसे- radio, television, cinema, newspaper आदि द्वारा समाजीकरण की प्रक्रिया तीव्रता से होती है। माध्यमों द्वारा भिन्न भिन्न सामाजीक पहलुओं पर अपने अपने ढंग से ज़ोर डाला जाता है। इतना ही नहीं, प्रचार के कुछ माध्यमों से विशेषकर television तथा cinema के माध्यम से बच्चे जो देखते हैं, उसका अनुकरण कर वैसा ही व्यवहार अपने जीवन में करना प्रारम्भ करते हैं। ऐसा करते करते वे कई तरह के नए नए सामाजीक व्यवहारों को सीख लेते हैं।

10) **सामाजीक मनोवृत्ति का विकास (Development of Social Attitude)** - सामाजीक मनोवृत्ति द्वारा भी समाजीकरण की प्रक्रिया होती है। यदि व्यक्ति में अन्य व्यक्तियों तथा सामाजीक क्रियाओं जैसे- जन्मदिन, पार्टी, आदि के प्रति अनुकूल सामाजीक मनोवृत्ति का विकास होता है, इस तरह का समायोजन करने में वे अनेकों तरह के सामाजीक व्यवहार करना सीख लेते हैं, जिससे उनके समाजीकरण की प्रक्रिया अधिक तीव्र हो जाती है। तथा जिन व्यक्तिओं में सामाजीक व्यवहार को सीखने में कोई तत्परता नहीं होती है उनकी समाजीकरण प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

उपर्युक्त बातों द्वारा स्पष्ट होता है की व्यक्ति का समाजीकरण अनेक प्रक्रियाओं द्वारा संपन्न होता है। इन विभिन्न प्रक्रियाओं में मूलतः अनुकरण, सुझाव, सहानुभूति तथा तादात्म्य आदि अधिक प्रमुख है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology